विनोद कुमार शुक्ल

विनोद कुमार शुक्ल का जन्म 1 जनवरी 1937 ई० में राजनाँदगाँव, छत्तीसगढ़ में हुआ। उन्होंने वृत्ति के रूप में प्राध्यापन को अपनाया। वे इंदिरा गाँधी कृषि विश्वविद्यालय में एसोसिएट प्रोफेसर थे। वे दो वर्षों (1994-1996 ई०) तक निराला सृजनपीठ में अतिथि साहित्यकार भी रहे। उनका पहला कविता संग्रह 'लगभग जयहिंद' पहचान सीरीज के अंतर्गत 1971 में प्रकाशित हुआ। उनके अन्य कविता संग्रह हैं - 'वह आदमी नया गरम कोट पहिनकर चला गया विचार की तरह', 'सबकुछ होना बचा रहेगा' और 'अतिरिक्त नहीं'। उनके तीन उपन्यास - 'नौकर की कमीज', 'खिलेगा तो देखेंगे' और 'दीवार में एक खिड़की रहती थी' तथा दो कहानी संग्रह - 'पेड़ पर कमरा' और 'महाविद्यालय' भी प्रकाशित हो चुके हैं। उनके उपन्यासों का कई भारतीय भाषाओं में अनुवाद हो चुका है। इतालवी भाषा में उनकी कविताओं एवं एक कहानी संग्रह 'पेड़ पर कमरा' का अनुवाद हुआ है। 'नौकर की कमीज' उपन्यास पर मणि कौल द्वारा फिल्म का भी निर्माण हुआ है। विनोद कुमार शुक्ल को 1992 ई० में रघुवीर सहाय स्मृति पुरस्कार, 1997 ई० में दयावती मोदी कवि शेखर सम्मान और 1990 ई० में साहित्य अकादमी पुरस्कार प्राप्त हो चुके हैं।

बीसवीं शती के सातवें-आठवें दशक में विनोद कुमार शुक्ल एक कवि के रूप में सामने आए थे। कुछ ही समय बाद उसी दौर में उनकी दो-एक कहानियाँ भी सामने आई थीं। धारा और प्रवाह से बिल्कुल अलग, देखने में सरल किंतु बनावट में जटिल अपने न्यारेपन के कारण उन्होंने सुधीजन का ध्यान आकृष्ट किया था। यह खूबी भाषा या तकनीक पर निर्भर नहीं थी। इसकी जड़ें संवेदना और अनुभूति में थीं और वह भीतर से पैदा हुई खासियत थी। तब से लेकर आज तक वह अद्वितीय मौलिकता अधिक स्फुट, विपुल और बहुमुखी होकर उनकी कविता, उपन्यास और कहानियों में उजागर होती आयी है।

प्रस्तुत कहानी कहानियों के उनके संकलन 'महाविद्यालय' से ली गयी है। कहानी बचपन की स्मृति के भाषा-शिल्प में रची गयी है और इसमें एक किशोर की वय:संधिकालीन स्मृतियाँ, दृष्टिकोण और समस्याएँ हैं। कहानी एक छोटे शहर के निम्न मध्यवर्गीय परिवार के भीतर के वातावरण, जीवन यथार्थ और संबंधों को आलोकित करती हुई लिंग-भेद की समस्या को भी स्पर्श करती है। घटनाएँ, जीवन प्रसंग आदि के विवरण एक बच्चे की आँखों देखे हुए और उसी के मितकथन से उपजी सादी भाषा में हैं। कहानी का समन्वित प्रभाव गहरा और संवेदनात्मक है। कहानी अपनी प्रतीकात्मकता के कारण मन पर एक स्थायी प्रभाव छोड़ती है।

MODEL SOLUTION ABSOL PATNA

मछली

दौड़ते हुए हम लोग एक पतली गली में घुस गए । इस गली से घर नजदीक पड़ता था। दूसरे रास्तों में बहुत भीड़ थी । बाजार का दिन था । लेकिन बूँदें पड़ने से भीड़ के बिखराव में तेजी आ गई थी ।

दौड़ इसलिए रहे थे कि डर लगता था कि मछलियाँ बिना पानी के झोले में ही न मर जाएँ । झोले में तीन मछलियाँ थीं । एक तो उसी वक्त मर गई थी जब पिताजी खरीद रहे थे । दो जिन्दा थीं । झोले में उनकी तड़प के झटके मैं जब तब महसूस करता था । मन ही मन सोच रहा था कि एक मछली पिताजी से जरूर माँग लेंगे । फिर उसे कुएँ में डालकर बहुत बड़ी करेंगे । जब मन होगा बाल्टी से निकालकर खेलेंगे । बाद में फिर कुएँ में डाल देंगे ।

अब जोर से पानी गिरने लगा था । बरसते पानी में खड़े होकर झोले का मुँह आकाश की तरफ फैलाकर मैंने खोल दिया ताकि आकाश का पानी झोले के अन्दर पड़ी मछलियों पर पड़े । उनमें थोड़ी जान आ जाए । संतू भीगने से बचने के लिए एक मकान के नीचे खड़ा हो गया था। हम दोनों बुरी तरह भीग गए थे । तभी कोई मछली पानी के छींटे पाकर, कहीं आसपास किसी तालाब, या नदी का अंदाजकर जोर से उछली । झोला मेरे हाथ से छूटते-छूटते बचा ।

नहानघर का दरवाजा अंदर से हम लोगों ने बंद कर लिया था । भरी हुई बाल्टी थी, उसे आधी खाली कर मैंने झोले की तीनों मछलियाँ उड़ेल दीं । अगर बाल्टी भरी होती तो मछली उछलकर नीचे आ जाती । एक बार एक छोटी सी मछली मेरे हाथ से फिसलकर नहानघर की नाली में घुस गई थी । हाथों से मैंने और सन्तू ने टटोल टटोलकर ढूँढ़ा था । जब दिखी नहीं तो हम घर के पीछे जाकर खड़े हो गए थे जहाँ घर की नाली एक बड़ी नाली से मिलती थी । गंदे पानी में मछली दिखी नहीं । दीदी ने बताया था कि वह मछली इस नाली से शहर की सबसे बड़ी नाली में जाएगी फिर शहर से तीन मील दूर मोहारा नदी में चली जाएगी ।

संतू ठंढ से काँप रहा था । माँ हम लोगों को भीगा देखेगी तो मार पड़ेगी । मैंने संतू से कहा कि वह कमीज उतारकर निचोड़ ले । कमीज उतारकर हम दोनों ने निचोड़ी । पैंट को मुट्ठियों से दबादबाकर निचोड़ा । फिर हम दोनों केवल पेंट पहिने, गोद में गीली कमीज दबाये बाल्टी को घेरकर बैठ गए । जो सबसे नीचे दबी हुई मछली थी वही शायद मर गई थी ।

संतू से मैंने कहा "अपन ये सबसे ऊपर वाली मछली पिताजी से माँग लेंगे ।" संतू ने सिर हिलाकर कहा "अच्छा ।" वह बड़े प्यार से मछलियों की तरफ देख रहा था । वह मछलियों

को छूकर देखना चाहता था लेकिन डरता था। बाल्टी के थोड़ा और पास खिसककर एक मछली को पकड़ते हुए मैंने कहा, "संतू! तू भी छूकर देख न।"

"नहीं, काटेगी" संतू ने इनकार करते हुए कहा।

"मैं तो छू रहा हूँ। मुझे तो नहीं काटती। ये मछली नहीं काटती। ले छू।"

संतू ने डरते डरते एक मछली को जो सबसे ऊपर थी उँगली से छुआ। फिर डरकर उसने अपना हाथ खींच लिया।

"डरता क्यों है?" कहकर एक मछली को मैंने उठा लिया। मछली मेरे हाथों से फिसली पड़ रही थी। मैंने उसे फिर बाल्टी में डाल दिया। बाल्टी में पड़ते ही वह उछली तो पानी के छींटे हम लोगों पर पड़े। तब संतू चौंककर थोड़ा पीछे हट गया था।

नीचे दबी हुई मछली की आँखों में मैं अपनी छाया देखना चाहता था। दीदी कहती थी जो मछली मर जाती है उसकी आँखों में झाँकने से अपनी परछाई नहीं दिखती।

बाल्टी में हाथ डालकर मैंने मुर्दा सी पड़ी उस मछली को बाहर निकाला। नहानघर के फर्श पर उसे धीरे से रख दिया। उसकी पूँछ को पकड़कर दो-तीन बार हिलाया तो भी उस मछली में थोड़ी भी हरकत नहीं हुई। उसकी लंबी एक एक बाल की मूछें छोर से छल्लेदार बन गई थीं। 'संतू! तू इसकी आँख में झाँक के देख तेरी परछाई इसमें दिखती है क्या?" मछली बाहर फर्श पर थी इसलिए संतू थोड़ी दूर हटकर बैठा था। मेरे यह कहने से कुछ पास आकर मछली की आँख में उत्सुकता से झाँकने लगा। "और पास से देख। परछाई दिखती है?" समझाते हुए मैंने उससे कहा "दीदी कहती है मरी मछली की आँख में आदमी की परछाई नहीं दिखती।" दूर से सिर झुकाये मछली की आँखों में झाँकता हुआ संतू चुपचाप था। कुछ बोलता ही नहीं था कि परछाई दिखती है या नहीं।

"तुझसे कुछ भी नहीं बनता" कहकर दोनों हाथों से मैंने मछली को उठा लिया। फिर मछली को अपने चेहरे के बिल्कुल पास लाकर मैंने देखा तो मुझे उसकी आँख में धुँधली-धुँधली परछाई दिखी। ठीक से समझ नहीं आ रहा था कि यह मेरी परछाई थी या मछली की आँखों का रंग ही ऐसा हो गया था।

"शायद थोड़ी जान है" "जाकर तू चुपके से दीदी को बुला ला।"

मैंने संतू से कहा। और मैंने मछली फिर से बाल्टी में डाल दी। थोड़ी देर बाद संतू लौटकर आया तो कहा "दीदी तो रो रही है।"

"अभी दिन को सो रही है।" मुझे आश्चर्य हुआ।

"माँ कहाँ है?"

"उस तरफ मसाला पीस रही है।"

मेरा दिल बैठ गया। "च: च: मछली के लिए मसाला होगा"

"आज ही बनेगी" दुःख से मैंने कहा।

"भइया ! मछली अभी कट जायेगी ?" भोलेपन से संतू ने पूछा ।

"हाँ ।"

फिर संतू भी उदास हो गया ।

घर में मछली काटने के लिए एक अलग से पाटा था । उस पाटे के ऊपर ही मछली रखकर काटी जाती थी । पाटे में चक्कू के आड़े-तिरछे निशान बन गए थे । यह पाटा परछी में ड्रम के पीछे रखा रहता था । जिस रोज मछली बनती थी उसी रोज यह पाटा निकाला जाता था । घर का नौकर मछली काटा करता था । पानी का गिरना बिल्कुल बंद हो गया था । आँगन में आकर मैंने देखा जिस जगह मछली काटी जाती थी वहाँ वही पाटा धुला हुआ रखा था । पास में थोड़ी चूल्हे की राख थी । मैंने सोचा भग्गू कुआँ के पास चक्कू में धार कर रहा होगा । नहानघर का दरवाजा पूरा खुला था । मुझे बाल्टी दिख रही थी जिसमें मछलियाँ थीं । माँ वहाँ नहीं थी । शायद ऊपर होगी । माँ को घर में मछली, गोश्त बनना अच्छा नहीं लगता था । पिताजी ने कई बार चाहा कि हम लोग भी मछली, गोश्त खाया करें लेकिन माँ ने सख्ती से मना कर दिया था । और किसी को अच्छा भी नहीं लगता था, केवल पिताजी खाते थे ।

भग्गू को जैसे मालूम था कि मछलियाँ नहानघर में हैं । आते ही वह अंगोछे में तीनों मछलियाँ निकाल लाया । कुएँ में मछली पालने का उत्साह बुझ-सा गया था । पिताजी शायद अभी तक आए नहीं थे । कमरे में जाकर देखा तो सच में दीदी करवट लिए लेटी थी । संतू को मैंने इशारे से बुलाया कि वह भी गीले कपड़े बदल ले । शायद कुछ आहट हुई होगी । दीदी ने पलटकर हमें देखा । गीले कपड़ों में देखकर दीदी बहुत नाराज हुई । फिर प्यार से समझाया । संतू को दीदी ने खुद अपने हाथों से जाने क्यों बहुत अच्छे-अच्छे कपड़े पहनाए । मैं घर के धोए कपड़े पहिन रहा था तो दीदी ने कहा कि धोबी के धुले कपड़े पहिन लूँ । फिर दीदी ने पेटी से मेरे लिए कपड़े निकाल दिए । संतू के बड़े-बड़े बाल थे इसलिए अभी तक गीले थे । दीदी ने संतू के बालों को टावेल से पोंछकर, उनमें तेल लगाया । बायें हाथ से संतू की ठुड्डी पकड़कर दीदी ने उसके बाल सँवार दिए । जब दीदी संतू के बाल सँवार रही थी तो संतू अपनी बड़ी-बड़ी आँखों से दीदी को टकटकी बाँधे देख रहा था । सभी कहते थे कि दीदी बहुत सुन्दर है ।

दीदी से मैंने कहा "दीदी ! आज मछली आई है । तीन हैं । एक शायद मर गई है । उन्हें अभी भग्गू काटेगा ।" पहले तो दीदी चुप रही फिर कहा कि मैं कमरे का दरवाजा बाहर से बंद कर दूँ । वह कमरे में अकेले लेटेगी । उसकी तबीयत ठीक नहीं है । मैं और संतू दोनों चुपचाप कमरे से बाहर निकल आए । जब मैं दरवाजा बंद कर रहा था, तो दीदी लेटी हुई थी ।

भग्गू के पीछे खंभे के पास टिककर हम दोनों मछली का कटना देखने लगे । भग्गू ने एक मछली उठाकर पहले उसे पत्थर पर कसकर दो तीन बार पटका, फिर मुर्दा सी मछली के पूरे शरीर में अच्छी तरह राख मली । पाटे के ऊपर रखकर एक दाब से उसकी गर्दन काट डाली । मछली थोड़ी भी नहीं तड़पी । तभी जाने क्यों मेरे देखते ही देखते संतू एक मछली अंगोछे से

उठाकर बाहर की तरफ सरपट भागा । भग्गू भी मछली काटना छोड़कर "अरे ! अरे । अरे !" कहता हुआ उसके पीछे-पीछे भागा । मैं वहीं खड़ा रहा, पाटे में राख से लिपटी हुई सिर कटी हुई मछली पड़ी थी । अंगोछे में जो मछली लिपटी हुई सी थी उसका धीरे-धीरे लहरना मुझे साफ मालूम पड़ रहा था । मैंने सोचा संतू मुर्दा मछली लेकर भागा है ।

मुझे लगा कि दीदी के कमरे से दीदी की हल्की-हल्की सिसकियों की आवाज आ रही थी । धीरे से दरवाजा खोलकर मैं अंदर गया तो देखा कि दीदी सच में अपनी पहनी हुई साड़ी को सर तक ओढ़े, करवट लिए सिसक-सिसक कर रो रही थी । हिचकी लेते ही दीदी का पूरा शरीर सिहर उठता था । अंगोछे में लिपटी मछली का लहरना मुझे याद आया । वैसे ही धीरे से दरवाजा बंद कर मैं बाहर आ गया । भग्गू और संतू अभी तक नहीं थे । बाड़े की तरफ आकर मैंने देखा कि कुएँ के पास जमीन पर संतू जानबूझकर पट पड़ा था । दोनों हाथों से मछली को अपने पेट के पास छुपाए हुए था । भग्गू मछली छीनने की कोशिश कर रहा था । शायद उसे डर था कि संतू मछली कुएँ में डाल देगा तो पिताजी से उसे डाँट पड़ेगी । मैंने सुना कि अंदर की तरफ पिताजी के जोर-जोर से चिल्लाने की आवाज आ रही थी ।

तीनों मछलियों के कई टुकड़े हो गए थे । पाटे के पास मछलियों के गोल-गोल चमकीले पंख पड़े थे । दीदी जहाँ लेटी थी, उस कमरे का दरवाजा खुला था । शायद माँ अन्दर थी । पिताजी दरवाजे के पास गुस्से से टहल रहे थे । दीदी की सिसकियाँ बढ़ गई थीं । मुझे लगा कि पिताजी ने दीदी को मारा है ।

भग्गू जैसे ही बाहर जा रहा था तो पिताजी ने दहाड़कर कहा "भग्गू ! अगर नरेन घर में घुसे तो साले के हाथ पैर तोड़ बाहर फेंक देना । बाद में जो होगा मैं भुगत लूँगा ।"

भग्गू चुपचाप सिर हिलाकर चला गया । संतू सहमा-सहमा चुपचाप खड़ा था । कीचड़ से उसके साफ अच्छे कपड़े बिल्कुल खराब हो गए थे । बाल जिसे दीदी ने प्यार से सँवारा था उसमें भी बहुत मिट्टी लगी थी ।

नहानघर में जाकर मुझे लगा कि मछलियों की गंध आ रही है । बाल्टी के पास बैठकर मैंने पानी को हाथ से गोल-गोल खँगाला । फिर बाल्टी को उलट दिया तो नहानघर की नाली क्षणभर को पूरी भर गई, फिर बिल्कुल खाली हो गई । पूरे घर में मछलियों की जैसे गंध आ रही थी ।

◆ ◆ ◆

बोध और अभ्यास

पाठ के साथ

1. झोले में मछलियाँ लेकर बच्चे दौड़ते हुए पतली गली में क्यों घुस गए ?
2. मछलियों को लेकर बच्चों की अभिलाषा क्या थी ?
3. मछलियाँ लिए घर आने के बाद बच्चों ने क्या किया ?
4. मछली को छूते हुए संतू क्यों हिचक रहा था ?
5. मछली के बारे में दीदी ने क्या जानकारी दी थी ? बच्चों ने उसकी परख कैसे की ?
6. संतू क्यों उदास हो गया ?
7. घर में मछली कौन खाता था और वह कैसे बनायी जाती थी ?
8. दीदी कहाँ थी और क्या कर रही थी ?
9. अरे-अरे कहता हुआ भग्गू किसके पीछे भागा और क्यों ?
10. मछली और दीदी में क्या समानता दिखलाई पड़ी ? स्पष्ट करें ।
11. पिताजी किससे नाराज थे और क्यों ?
12. सप्रसंग व्याख्या करें -
    (क) बरसते पानी में खड़े होकर झोले का मुँह आकाश की तरफ फैलाकर मैंने खोल दिया ताकि आकाश का पानी झोले के अंदर पड़ी मछलियों पर पड़े ।
    (ख) अगर बाल्टी भरी होती तो मछली उछलकर नीचे आ जाती ।
    (ग) और पास से देख । परछाई दिखती है ?
    (घ) नहानघर की नाली क्षणभर के लिए पूरी भर गई, फिर बिल्कुल खाली हो गयी ।
13. संतू के विरोध का क्या अभिप्राय है ?
14. दीदी का चरित्र चित्रण करें ।
15. कहानी के शीर्षक की सार्थकता स्पष्ट करें ।
16. कहानी का सारांश प्रस्तुत करें ।

पाठ के आस-पास

1. कक्षा 12 की पाठ्यपुस्तक 'दिगंत भाग-2' में शामिल विनोद कुमार शुक्ल की कविता पढ़ें और कविता पर मित्रों से चर्चा करें ।
2. 'महाविद्यालय' संकलन स्कूल के पुस्तकालय से उपलब्ध कर पढ़ें तथा यह बताएँ कि उसमें और कौन-कौन सी कहानी आपको पसंद आयी और क्यों ?

भाषा की बात

1. **निम्नांकित विशेष्य पदों में उपयुक्त विशेषण या क्रियाविशेषण लगाएँ –**
   गली, मछली, उछली, कमीज, मूँछें, परछाईं, नहानघर, खँगाला
2. पाठ में प्रयुक्त विभिन्न क्रियारूपों को एकत्र कीजिए ।
3. **निम्नांकित वाक्यों के पद-विग्रह करें –**
   (क) मुर्दा सी मछली के पूरे शरीर में अच्छी तरह राख मली ।
   (ख) पाटे के पास मछलियों के गोल-गोल चमकीले पंख पड़े थे ।

शब्द निधि

टटोला	:	अनुमान किया, थाह लिया
फर्श	:	पक्की जमीन
उत्सुकता	:	कुतूहल, जानने की इच्छा
छोर	:	किनारा
पाटा	:	वह लकड़ी जिस पर रखकर मछली काटी गई
आहट	:	ध्वनि, आवाज, संकेत
पेटी	:	बक्सा
टावेल	:	तौलिया
टकटकी	:	अपलक देखना
अंगोछा	:	गमछा
सरपट	:	तेजी
लहरना	:	तड़पना
सिसकियों	:	रुदन की अस्पष्ट ध्वनि, धीमे-धीमे रोना
बाड़ा	:	अहाता
निचोड़ना	:	निथारना, गारना